Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
October-November-December 2019
Vol. 6 Issue 4 (B)

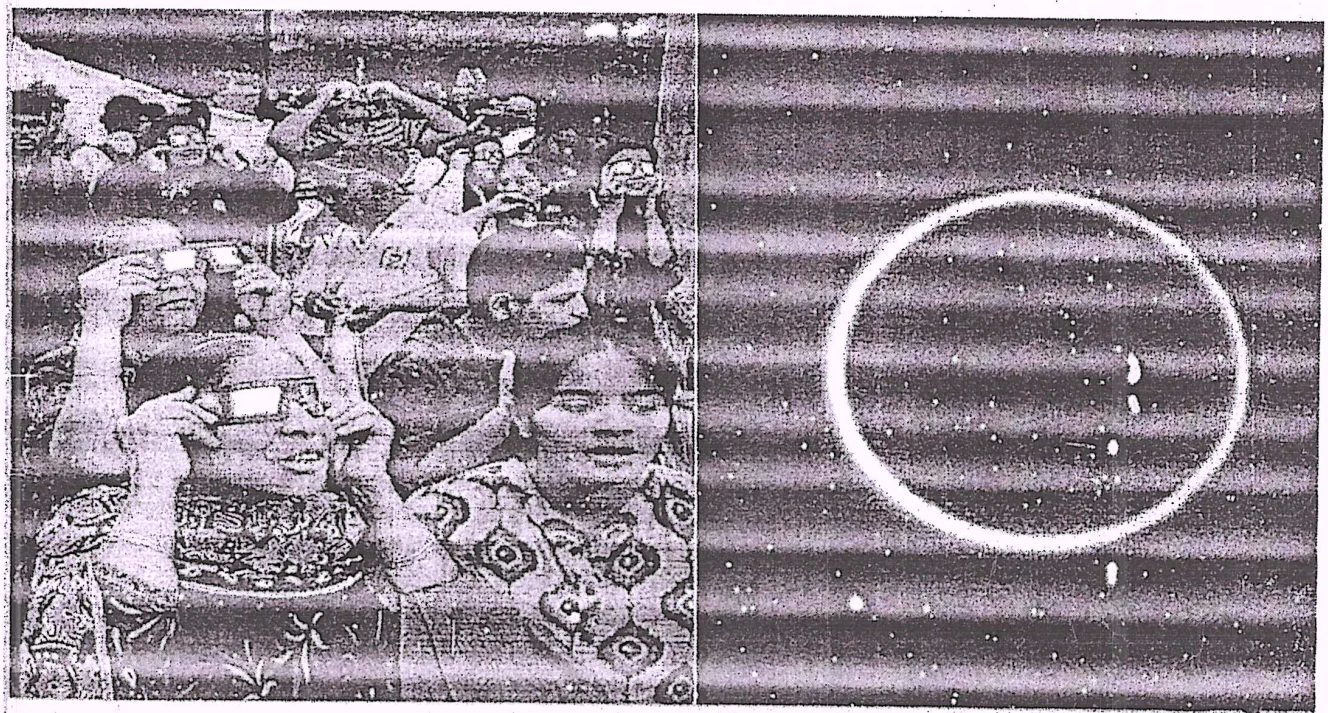

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCHJOURNEY
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019), | 2348-7143
Vol. 6, Issue 4 (B) | Oct.-Nov.-Dec. 2019
Peer Reviewed Journal

नागार्जुन की राजनीतिक कवितायें

डॉ. भारती म. सानप
हिंदी विभाग प्रमुख
शासकीय ज्ञान–विज्ञान महाविद्यालय,
किलेआर्क, सुभेदारी विश्रामगृह के पास,
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
मोबाई नं. ९३२५५२३७७७, ९४२०२३३५५५

कवि नागार्जुन जनवादी–चेतना के बडे महत्वपूर्ण कवि रहें। हमारे देश की सामान्य जनता के प्रति कवि की संवेदना अत्यंत अर्थपूर्ण एवं वैचारिक पृष्ठभूमि लेकर अभिव्यक्त हुयी है। कवि नागार्जुन की रचनाधर्मिता मात्र कविता तक सीमित न होकर उन्होंने जनसामान्य के जीवन को उपन्यासों के माध्यम से भी अभिव्यक्त किया है। कथा व काव्य इन दोनों धरातलों पर नागार्जुन एक श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में अपना परिचय रखते हैं।

असल में श्री बैद्यनाथ मिश्र के रूप में नामाभिमान रखनेवाले इस श्रेष्ठ साहित्यकार का उपनाम 'बाबा नागार्जुन' इस रूप में यथोचित प्रसिद्धी पा गया है। अपने जीवन पर्यंत कवि नागार्जुन ने सतत यात्रायें की। इन यात्राओं के जरिए उनका एकमात्र लक्ष्य रहा 'सामान्य भारतीय जनमानस'। जनसामान्य एक पहुँचकर उनके साथ बैठकर 'बाबा' ने उनकी आवश्यकतायें, उनकी जीवन जीने की पद्धति आदि को संपूर्ण रूप से जान लिया। इसे शासनकर्ताओं तक पहुँचाने के लिए अपनी सिद्धहस्त लेखनी का उपयोग कर उसे अपनी प्रतिभा से सबल–वैचारिक पृष्ठभूमि पर उतारकर, अत्यंत संवेदनशील मानवतावादी–साहित्य का निर्माण किया। उसे 'जन–जन का चेहरा' बनाने में यह यात्री कवि सफल रहा है।

'सफल रचनाकार' का अभिधान 'बाबा नागार्जुन' के लिए बहुत सफल साबित होगा क्योंकि समाज की विकसनशील–धारा में जनमानस के मुलभूत मूल्यों के प्रति सजग कवि बार–बार अर्थहीन के मनुष्य होने के स्वर को अधोरेखित करता है। यह रेखा बहुत गहराती है, जब वह व्यापक मानवीय–संवेदन को अपनी रचना का आधार बनाता है। 'रचना का प्रभावी' होना और 'साहित्यकार का सफल साहित्यकार होना' ये सामान्य बातें नहीं है। इसके लिए जीवन की तलाश महत्वपूर्ण होती है। उनकी यायावरी एवं रचनाधर्मिता पर अनेक प्रश्न उठायें गये। उनमें न जाते हुए बाबा नागार्जुन की जन–जीवन के प्रति श्रद्धा उन्हें जनसाधारण का जननायक कहती है।

कवि नागार्जुन मार्क्सवादी कार्यकर्ता रहें, उन्होंने मार्क्सवादी विचारों को पूर्णरूप से स्वीकार किया था। प्रायः यहीं नागार्जुन की कविता का 'स्थायी भाव' रहा। मार्क्सवादी या साम्यवादी चिंतक कवि होने के नाते कवि की कविता में जनसाधारण के लिए संवेदना का भाव ही नहीं उभरा अपितु एक सच्चा प्रतिभावान कवि सच्चा आधुनिक व्यक्ति एवं वर्तमान की समस्याओं के प्रति संकेत कर, दिशाबोध कराने वाला यह सफल कवि है। ''कानपूर–मुंबई से कमाकर गाँव जानेवाले श्रद्धालु गंगा में पैसे फेकते हैं। नागार्जुन इस दृश्य के भी दर्शक है। वे सोचते हैं कि पानी में जाने 'कौस्तुभ मणि' खोज रहे हैं 'चतुर्भुज नारायण!' इन मल्लाह पुत्रों के लिए गंगा मइया से अनुरोध करते है।''[१]

देखना ओ गंगा मइया.
निराश न करना इन नंग–धडंग चतुर्भुजों को।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

सामान्य कामकाज में भी निर्बंध लग गए हैं। जनता के मूलभूत अधिकारों की धज्जियाँ आज की राज्य व्यवस्था का अंग बन गयी है। इन्हीं गलत परिवर्तनाओं के कारण कवि नागार्जुन को शासन व्यवस्था पर क्रोध है।

नागार्जुन की राजनीतिक कवितायें प्राय: वैचारिक पृष्ठभूमि लिए हुए है। देश के स्वतंत्रता–संग्राम में स्वातंत्र्य–सैनिक बने स्वतंत्रता सेनानी को स्वतंत्र देश में अपनी पेन्शन–राशि भी मिल नहीं पाती। उसे 'वे खा गए...' इस कविता में कवि ने बडा महत्वपूर्ण दस्तावेज दिया है। इन स्वतंत्रता–सेनानियों की पेन्शन राशि सत्ताधारी खा जाते हैं। स्वतंत्र देश के स्वातंत्र्यहीन जनसाधारण का प्रभावी परिचय कवि ने दिया है –

मिट्टीवाली
कच्ची समाधि से
पाँच दिनों–पूर्व की
जरा सी राख
ऊपर साफ–साफ
नजर आ रहीं थीं
.....
''मैं स्वतंत्रता–संग्राम का सैनिक था
हमारी पेन्शन–राशि
वे खा गए...''

(इस गुब्बारे की छाया में, पृ. १९)

'मिट्टीवाली कच्ची समाधि' से 'अस्थि–चूर्ण' में 'बरसात में धूलने के बाद' 'अकस्मात कंपन' होना और 'सुक्ष्मतम स्वरों में' अपनी पेन्शन राशि के उनके अर्थात् शासनकर्ताओं के द्वारा 'खा–जाने' की बात को यहाँ लक्षित किया गया है।

कवि नागार्जुन ने शासक–वर्ग पर कड़ा प्रहार करने के लिए हमेशा 'जनवादी मोर्चे' को बल दिया। कवि ने यहाँ पर अपने सृजनात्मक साहस का उपयोग कर 'आत्मगत सच' का उद्घोष किया है। उद्घोष के उपरांत उसके परिणाम के बारे में वह रोता नहीं। सत्य की व्याख्या के लिए उन्होंने कहीं पर भी सहारा नहीं ढूँढा। कवि जानता है – 'चुपचाप हजम' करने का काम मात्र राजनीति में ही होता है। उनकी 'गुपचुप हजम करोगे' कविता में शासनकर्ताओं की दलाली के तथा किये जानेवाले शोषण का स्पष्ट रूप लेखा जोखा मिलता है –

कच्ची हजम करोगे
पक्की हजम करोगे
चूल्हा हजम करोगे
चक्की हजम करोगे
.....
बोफोर्स की दलाली
गुपचुप हजम करोगे
नित राजघाट जाकर
बापू–भजन करोगे

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

के प्रसंग को कवि ने बहुत मार्मिक पृष्ठभूमि प्रदान की है। राम के द्वारा अहल्या उद्धार के बाद राम माँ कहकर घूटने टेककर प्रणाम करते है, तब आशीष देते समय अहल्या कहती है –

वत्स राजकुल में पाया है जन्म / कभी बनोगे तुम्हीं कोसलाधीष
फिर चरणों पर माना दिग्देशीय / अर्पित होंगे शत शत सुंदर फूल
(अनाथ अस्पृश्य सहज कमनीय)! / अंत:पुर में षोडशियों के मध्य बिता – सकोगे तुम भी तब दिन–रात /
शरद शिशिर मधु ग्रीष्म और बरसात
नहीं अहल्या आयेगी फिर याद।

युगधारा, पृ. ४१.४२

अहल्या अपना उद्धार करनेवाले राम के प्रति शंकाशील हो जाती है। परंतु राम उसे आश्वस्त करते हुए कहते है कि 'वे जीवन भर अहल्या को याद करेंगे, कभी नारी के प्रति क्रूर नहीं होंगे। दूसरा विवाह नहीं करेंगे। तथा सपने में भी कभी दासी का अपमान नहीं करेंगे।' राम की नारी के प्रति मानवीयता सामंती–विरोधी भावधारा का महत्वपूर्ण प्रतीक है।

कवि नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में महात्मा गांधी जी को विशेष स्थान दिया गया है। कवि की दृष्टि में आधुनिक भारत में महात्मा गांधी जी से बडा कोई नेता नहीं है। बापु की राजनीतिक सक्रीयता को कवि बहुत महत्वपूर्ण मानता है। बापु की हत्या पर वह भावाकुल भी हो उठता है। गांधी जी अनुयायियों की दो मुँही जीवन पद्धति पर उन्हें चीढ है।

लाज–शरम रह गयी न बाकी गांधीजी के चेलों में
फूल नहीं, लाठियाँ बरसती रामराज की जेलों में

इस गुब्बारे की छाया में, पृ. ६२

स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्ष बाद पडे अकाल का वर्णन कवि ने बडा वास्तविक किया है।

कई दिनों तक चूल्हा रोया / चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
.....
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाखें कई दिनों के बाद

सतरंग पंखोंवाली, पृ. ३२

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

जनवादी भावधारा से प्रेरित कवि नागार्जुन की प्रगतिवादी काव्यधारा हमेशा साम्राज्यवाद का विरोध करती आयी। ''नागार्जुन को कविताओं में मनुष्य के शोषण के तीनों रूपों – साम्राज्यवाद, सामंतवाद और पूँजीवाद के विरूद्ध तीव्र रोष का जो भाव दिखाई देता है, वह प्रगतिशील काव्यधारा से उनके अभेद्य संबंध का प्रमाण है।''[२] प्रगतिवादी कवि होने के नाते कवि ने अपनी कविताओं में प्राय: जनहित को सर्वोपरी स्थान दिया है।

कवि नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में जनसाधारण एवं अखिल जनमानस की जागृति के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि बहुत सघन रही है। आडंबरपूर्ण शासन व्यवस्था, आहत जनमानस, पुरान कथाओं के मिथकों का सफल प्रयोग, इत्यादी कवि की कविता के विषय प्रभावी रहे हैं। कवि का संवेदनशील मानस हमेशा जन जागृति में सक्रीय रहा। अन्त में उन्हीं के शब्दों में –